सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● डॉ रामकुमार रामरिया

सृजक-सृजन-समीक्षा

डॉ.रामकुमार रामरिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
डॉ.रामकुमार रामरिया का परिचय

मेरी कहानी

विक्रम संवत 2010, कार्तिक की घनघोर काली अमावस्या.... अब इस दिन तो चाँद ने भी हाथ ऊपर कर दिए....ऐसे समय मुझे भेजा गया....एक ऐसे घर में जिसमें जनधन, गोधन तो बहुत था, पर कार्तिक अमावस्या में कोई दीपक नहीं जलाता था...कभी किसी स्वजन ने देहलोक त्यागकर तेजलोक गमन किया था....भारतीय परंपरा मान्यताओं पर चलती है.. अब तेजलोक से किसी जीव की वापसी न हो तो दीप कैसे जले! मैं आया....

उस दिन न केवल दीप जला बल्कि दीपावली भी मनायी गयी ...चूँकि पर्व गोवर्धन का भी होना ही था तो एक गो-वर्द्धन भी हुआ। अपने लिए गोरस की व्यवस्था भी मैं करता चला था।

यह काम मेरे पहले आनेवाले भाई बहन नहीं कर सके, वे आठ थे, मेरा क्रम 9वां था .... किसानी में बड़े परिवार का अपना महत्व है....और व्यापार में भी...किसानों और व्यापारियों का बड़ा गहरा रिश्ता है.... एक आहना प्रसिद्ध है-

मंगलवार को होय दिवाली, हंसे किसान रोय व्यापारी!!

मैं समन्वय पर भरोसा रखता हूँ। किसानों और व्यापारियों में संतुलन बनाने के लिए मैंने फुर्सत का दिन चुना.. रविवार का। इतवारी बाजार भरे हुए थे किसानों की अनाज की गाड़ियां मैदान में ढिली हुयी थी...

शाम का वक़्त ..समय सात बजे....दिन छोटे...सब घर लौटे...और मैं भी दुनिया में पधराया.....

प्रारंभिक शैशवकाल गांव में बीता। कौली कौली स्मृतियों की मिचमिची अवस्था से पढ़ाई शुरू होने के पहले तक...

चार वर्ष की उम्र तक..... गाँव, जंगल, नदी, नदी के किनारे के अपने खेत, खलिहान, पहाड़ आदि मेरे मन में चुपके चुपके घर करते चले गए..... फिर मेरी पढ़ाई के दिन शुरू हुए तो पिता रेलवे में सेवा करने लग गए पुत्र के पास आ गए। दो युवा पुत्रों के रेलवे में आ जाने से और दो पुत्रों और दो पुत्रियों के अकस्मात काल कवलित हो जाने से पिता टूट गए...पहले खेत अधिया में गये और फिर बिक गये..मेरे स्कूल में जाने के पहले ही

पिता ने पीड़ा में प्राण छोड़ दिए....
हवाएं शुरू ही तेज थीं....अब और तेज हुईं... मेरा नाम बड़ी आशा से रखा गया था **राम. रामकुमार**...अंत समय अंतिम पुत्र का नाम पिता लेंगे तो रामलीन होंगे...दूसरा नाम भी रखा गया..दीपक जलाने आया था...अतः **दीपचंद**.... अर्थात **दीपक चंद्र**.... उत्कृष्ट आशावाद और पुरोगामी परम्परा आ गयी थी नाम में... दीप से चंद्र तक विनिर्माण की पूर्वजों की अभिलाषा को नियति ने कितनी सहायता की, परिणाम अभी शेष है...
बचपन में '**किति बेर मोहिं दूध पियत भय**, **यह अबहूँ है छोटी।**
मैया मोरी कबहूँ बढ़ेगी चोटी!!'
कुनकुनी धूप में उँगलियों में चोटी घुमाते हुए हम यह पाठ पढ़ते थे तो मुग्ध हो जाया करते थे। बाद में बिना सर खुजाये घंटों *सूर* पर लिखने में भी आनंद आया। फिर **यह कदम्ब का पेड़** और **नानी के घर अभी गयी माँ तू परसों से, ऐसा लगता है गयी हो तू बरसों से!"** आदि गीतों की ममार्मिकता और करुणा ने हृदय पर घर कर लिया। अब तो लगता है वही करुणा अवसर मिलते ही गीतों में उतर आती है।
इसी बीच भाई गम्भीर रूप से बेमार हुए। रेलवे ने उन्हें रामकृष्ण सेनेटोरियम रांची में भर्ती करवाया। रामकृष्ण चिकित्सालय विवेकानंद साहित्य का बड़ा केंद्र था। बंगाली और हिंदी साहित्य वहां रोगियों को उपलब्ध था। भाई ने वहां बंगाली सीखी। मुझे भी वहां दो बार वहां जाने का सुख मिला। रमणीय हर भरे वातावरण और साधुओं का साहचर्य मेरे अन्दर अनजाना सा अकूत प्रभाव छोड़ता चला गया। कोई दो साल में स्वस्थ होकर भाई जब घर लौटे तो पूरी तरह परिवर्तित थे। वह परिवर्तन में भी बदल गया। अनाज की बोरियां सत्साहित्य में बदल गईं।
रेलवे में ज्यादातर बंगाल, तमिलनाडु,आंध्र आदि की बहुतायत से एक बहुरंगी भारत स्वाभविक रूप से भाव, व्यवहार और भाषा में घुल गया। वसुधैव कुटुंकम की किताबियत को सचमुच जीवित देखा।
चौरई की शासकीय शाला, छिंदवाड़ा का रेलवे मिश्रित स्कूल, सिवनी का मिशन स्कूल, आदि से होता हुआ **यायावर शिक्षण** मुझे बालकृष्ण शर्मा नवीन का गीत **हम तो रमते राम, हमारा, क्या घर, क्या दर, कैसा वेतन, हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!** हमेशा याद रहा।हमेशा याद रहता है।
मेरी पढ़ाई में पाठ्यक्रम के समानांतर इतर साहित्य साथ साथ चलते रहा। बड़े भाई को गायन, अभिनय, नाट्य आयोजन में रूचि थी। वह नितांत बचपन से मैंने देखा। कृष्ण सुदामा, हरिश्चंद्र तारामती, भक्त प्रहलाद, भक्त ध्रुव....आदि की संगीतमय प्रस्तुतियां मन में जमा पूंजी (fixed deposit) बन कर पड़ी रहीं जिनका ब्याज कठिन परिस्थितियों में मेरी मदद करते रहा।
तीसरे भाई को विज्ञान में रूचि थी लेकिन प्रेमचंद, बंकिम, रवींद्र, चतुरसेन, यशपाल आदि को भी पढ़ते थे। मैं मिडिल स्कूल में था। भाई कॉलेज चले जाते तो मैं घर आता। बड़ी किताबें पढ़कर जितना समझना था समझा, शेष प्यास बाद में बुझी।
अंततः मैं राजनांदगाँव पहुंचा।

राजनांदगांव पहुंचने की कहानी अद्भुत है। चौरई में मुख्यमंत्री द्वारिका प्रसाद मिश्र स्मृति उच्चतर माध्यमिक शाला से 11वीं बोर्ड के बाद साइंस कालेज सिवनी और डेनियलशन डिग्री कॉलेज दोनों में प्रवेश मिल गया। लेकिन डेनियलशन छिंदवाड़ा को चुना। वहां के इसाई ग्रन्थपाल ने विपुल हिंदी साहित्य से परिचय कराया। विज्ञान का विद्यार्थी साहित्य पढ़े यह अच्छा था। ईसाई ग्रंथपाल महोदय ही मुझे महादेवी, निराला, प्रसाद, मैथिली, जायसी वगैरह पढ़ने के लिए देते। कठिन शब्दों के अर्थ समझाते। वे शायद रिसर्च स्कॉलर रहे होंगे। साकेत के 'साहित्य' के समांत 'राहित्य' में मैं उलझ गया। उनसे पूछ तो काफी सोचकर बोले:"अभी नहीं बता पाउँगा, कल आना।"
दूसरे दिन उन्होंने मुझे व्युत्पत्ति सहित राहित्य का अर्थ मिझसे ही निकलवाया और इस तरह एक मानसिक कुंजी(मास्टर की) दी जिससे मैं शब्दों के कठिन ताले खोलता रहा। लेकिन उसी समय मैं गम्भीर रूप से बीमार पड़ा और घर लौट गया। परिस्थितियां कठिन थीं। बड़े भाई अलग हो चुके थे, मंझले भाई महाराष्ट्र में पदस्थ थे। संझले भाई ने मेरे 11वीं पास करते ही उसी स्कूल से विज्ञान व्याख्याता पद से इस्तीफ़ा दे दिया। वे 10 वीं में मेरे क्लास टीचर भी थे।
मंझले भाई ने जिम्मेदारी हमेशा ली थी। इस बार भी ली। मां के साथ मैं नागपुर भंडारा के बीच खात जैसे छोटे स्टेशन में आ पड़ा, जो भंडारा रेलवे से मात्र छः किलोमीटर पर था। वहां आबोहवा अच्छी थी। मैं जल्दी ठीक हो गया पर साल बर्बाद हो गया। नागपुर में हिस्लोप कॉलेज में प्रवेश की तैयारियां चल रहीं थीं...अचानक एक **दिन अख़बार में ऐसा कुछ पढ़ा** कि मेरी ज़िंदगी की दिशा बदल गयी।
बता दूं कि किताबों के बीच रहते रहते लिखने का शौक भी जाग गया था। सातवीं कक्षा में था तब ठीक दीवाली पर अपना पहला युग्म लिखा :
न गोरी होती न काली होती है!
दीवाली तो बस दीवाली होती है!
काले गोरे पर उन दिनों बात चलती रही होगी। सुनता था चुप चुप... कविता में आ गयी।
मेरे कुछ अखिल-भारतीय मित्र इन दिनों बने थे...चंद्र शेखर पांडेय, प्रकाश बेनर्जी, अरूप गांगुली, सभी रेलवे प्रबंधकों के बेटे, सभी के घरों में लिब्रेरियां, मेरे भाई भी संचालन प्रभाग में.... दो और मित्र थे सिवनी के प्रसिद्ध डॉक्टर भोलानाथ लूथरा का नवासा प्रमोद लूथरा और एक गुजराती ठेकेदार का पुत्र हरीश टांक....
शेखर से मेरी दांत काटी रोटी का रिश्ता था। उसके पिताजी की लाइब्रेरी में घुसकर हम किताबें पढ़ते थे और दादी के पूजाघर में बंद होकर ग्रामोफोन में भजन सुनते थे...वहीं सुना था *तेरे पूजन को भगवान..बना मन मंदिर आलीशान
शेखर की हैंडराइटिंग बहुत खूबसूरत थी....ऊपर लाइन नहीं खींचता था पर शब्द भटकते नहीं थे...वह कहानियां लिखता था...आठवीं में हम दोनों को एक प्रतियोगिता की सूझी... एक एक उपन्यास लिखना था..छुट्टियों के दिन थे...रोज मिलते..दोपहर शेखर के घर की लाइब्रेरी और दादी के पूजा घर में बीतती। ...'कितना लिखा, क्या लिखा' की इडताल

होती....छुट्टियां बीतते बीतते दो उपन्यास पूरे.. फिर उसके पिता का तबादला हो गया...दोस्त चला गया....दो उपन्यासकार छपने के पहले ही अनछपे रह गए..फिर वैसा दोस्त न मिला....

मैं भी सिवनी से स्थानांतरित हुआ....इसी बीच मैट्रिक तक मैं प्रकाशित होने लगा...मंचों से कविता, हिंदी की कुण्डलिया पढ़ने लगा...उस समय तक काका बहुत सुने पढ़े जाने लगे थे।

अख़बार में मैंने पढ़ा पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी की मृत्यु की सूचना....राजनांदगाँव महाविद्यालय से उनका सम्बन्ध...मैंने उनकी रचनाएँ पढ़ रखी थीं...

मैने निश्चत कर लिया कि पढ़ूंगा तो राजनांदगांव में...

नागपुर मंडल का अंतिम स्टेशन दुर्ग, राजनांदगांव उससे पहले का बड़ा स्टेशन, छोटे स्टेशन से इतने बड़े स्टेशन में तबादला भाई की दृष्टि में असम्भव था...किन्तु असम्भव भी संभव हो गया....पहले के और भी आवेदन थे पर जुलाई में भेजा अक्टूबर में आदेश बनकर वापस आ गया....

राजनांदगांव **मेरे जीवन का स्वर्णकाल** है। उन्हीं दिनों वह जिला बन रहा था। उसी दिनों महाविद्यालय शासकीय होने जा रहा था..उन्हीं दिनों राष्ट्रीय खेल हॉकी का राष्ट्रीय टूर्नामेंट वहां होना था....नया दिग्विजय स्टडियम बन रहा था...मजाक करते हुए हमेशा कह देता हूँ कि यह सब मेरे स्वागत की तैयारियां थीं....हा हा....अब हास्य कोई न सबझे और मुंह में उसके कुनेन घुल जाये तो क्या उपाय है....राजनांदगांव 26 जनवरी 72 को जिला नहीं बनेगा? बन गया...दिग्विजय महाविद्यालय शासकीय नहीं होगा? हो गया! दिग्विजय स्टेडियम भी 26 जनवरी 72 को किशोरीलाल शुक्ल, पूर्व प्राचार्य दिग्विजय कॉलेज, राजस्व मंत्री म.प्र. के क्र कमलों से लोकार्पित हुआ। बक्शी जी ने किशोरी लाल जी के प्रचार्यत्व में दिग्विजय महाविद्यालय में अध्यापन भी किया। बाद में मुक्तिबोध ने भी वहां अध्यपन कराया। मानस मर्मज्ञ बलदेवप्रसाद मिश्र जी का साहित्यिक अवदान महाविद्यालय को मिलते रहा। प्रातः भ्रमण में उनको प्रणाम करने का अवसर मिलता। राजनांदगांव में अनेक साहित्यिक गतिविधियां सीखीं। पदाधिकारी रहे, पुरस्कार जीते, अखबार की सुर्खियां बने, संपादन किया, कॉलम लिखे,अखबार निकाला, खूब छपे, लेखक संघ और सम्मेलन में गये। राष्ट्रीय विभूतियों से मिले कैफ़ी आज़मी, हरिशंकर परसाई, भीष्म साहनी, हंगल आदि को पास से देखने सुनने का अवसर मिला। जाना कि सीखना क्या होता है। सीखे जा रहे हैं....64वें वर्ष की महायात्रा प्रारम्भ है....मजाक मजाक में कहीं एक सौ चौसठ साल तक न चलता रहूं ...जैसा कि कहनेवाले कह जाते हैं कि164साल जियो....हा हा हा...

डॉ.रामकुमार रामरिया,
35, स्नेह नगर, बालाघाट.

"सृजक का सृजन"

मौसम

ये किसे देखकर मन सुमन हो गया,
आज उपवन में आने का अवसर मिला!
एक फूलों भरी डाल तन छू गयी,
मन को फिर गुनगुनाने का अवसर मिला!

तप्त पीड़ा के पर्वत पे चढ़ते हुए,
पाँव थकने लगे, तन झुलसने लगा!
छांह पेड़ों की मुरझाई सी ही मिली,
जिस तने से टिका वो दरकने लगा!
फिर अचानक कहीं से घिरीं बिजलियाँ,
आँख को भीग जाने का अवसर मिला!!

स्नेह की इक छुअन को तरसते हुए,
कितने **मौसम** गए, अनसुने अनकहे!
जो विरह-वेदना त्यक्त-श्रृंगार थी,
उसके आंसू थके तो कहां फिर बहे!
किसके आंगन में आने की आहट हुयी,
फिर किसे आगवाने का अवसर मिला!!

कौन चंचल हवा झांककर थी गयी,
सारी बस्ती में सरसर बही खलबली!
ये समाचार फैला कि कौतुक हुआ,
एक पथरायी सी आस उड़कर चली!
देखते देखते मोंगरे खिल गये,
उनको वेणी सजाने का अवसर मिला!

स्वर्णचम्पा के सांचों में ढाले हुए,
चांदनी के चन्दौबों में पाले हुए!
रसमयी रात के दीर्घ उच्छ्वास में,
मन की गहराइयों से निकाले हुए!
पांव पर पांव रख मौन तिरछे खड़े,
किसको यूँ मुस्कुराने का अवसर मिला!

नेह की आसमां पर घिरीं बदलियां,
फिर से धरती का आँचल लगा भीगने!
फिर ख़ुशी से लगीं चीखने बिजलियाँ,
ताप का तीखापन फिर लगा छीजने!
हर नदी तोड़कर फिर उमड़ती चली,
उनको प्रीतम को पाने का अवसर मिला!

पहले मंगलाचरण, फिर हुयी अर्चना,
अपने आराध्य से फिर हुयी प्रार्थना!
फिर कथा चल पड़ी,सब व्यथा गलगयी,
धीरे-धीरे चरम पर गयी साधना!
फिर सुधारस का पावन मिला आचमन,
फिर तो पीने पिलाने का अवसर मिला!

सन्नाटा

या हमको बुला लीजिये, या आप आइये!
सन्नाटा चारों ओर है, कुछ गुनगुनाइए!!

कुमकुम लिए खड़ी है घड़ी इंतज़ार की!
एकाध खुली छूट गयी लट श्रृंगार की!
पलकों की ओट से दिए आँखों के छुपाये!
चौखट बनी खड़ी है वो अपने ही द्वार की!
आधे खुले पटों को ज़रा खटखटाइये!!....१

मण्डप पे मन के सारे मनोरथ लगा दिये!
अनुनय विनय के फूल से परिपथ सजा दिये!
मनुहार ही हैं तोरणों के रूप में बंधे,
आंगन में चौक पूरा तो सपने बिछा दिये!
उत्सव का समय हो गया है अब तो आइये!....२

आओ कि मिलने जुलने का कुछ सिलसिला चले!
इस प्रेम की गली में न शिकवा-गिला चले!
नफरत-अदावतों के सभी ढेर जलाकर,
हर शख्स साथ-साथ चले, दिल मिला चले!
जो कुछ कहा सुना हो सभी भूल जाइए!...३

गीत

(प्रकृति के जो निकट गया है...)

शांत चित्त से पी लेता है नभ तम और प्रकाश!!
कब,किससे, क्या कहे कष्ट कुछ,कहाँ,किसे अवकाश!

कीकर के वन में चंदन की सबको मिले सुगंध!
सूर्य, धरा मिलकर कर देते इसका पूर्ण प्रबंध!
प्यासों को निर्झर मिल जाते,भूखों को फल,कंद!
सुमनों में पा जाते- मधुकर, मधुमक्खी, मकरंद !
प्रकृति के जो निकट गया है, लौटा नहीं निराश!..

पल, छिन के ताने बानों से, बुनते हैं दिन-रात!
काली, उजली चादर ओढ़ें संध्या और प्रभात!
बिंदु-बिंदु होकर ही तारे विश्व-चौकसी करते!
चंद्र और नक्षत्र विविध भावों को भव में भरते!
सुख-दुख, मिलन-वियोग बांटता यथायोग्य आकाश!.

कलाधरों सा मायावी जग बदले विविध मुखौटे!
कहीं स्वर्ण-सारंग बने तो, कहीं तपस्वी खोटे!
इंद्रप्रस्थ के इंद्रजाल में थल भी जल हो जाता!
जो क्षण संध्या में ढलता वह दिन का पल हो जाता!
भले भलाई बाँट रहे, कापुरुष कुटिल कटु-प्राश!....

जन-जन में सौहार्द्र बढ़े, सद्भाव बने आधार!
सबमें हो सौजन्य, सरसता, समता का व्यवहार!
जाति-पांति का, धर्म-पंथ का, भेद-भाव मिट जाए!
सब अनेकता एकरूप हो, भारतवर्ष बनाए!
इस अभिलाषा के पथ में ना आये किन्तु या काश!...

जीवन

जीवन मिला हमें अलबेला!!
खट्टा, मीठा, तिक्त, कसेला!!

मुंह में राम बगल में छूरी
बांहों में साँपों के डेरे!!
धूल आँख में झोंक हवा हर
सम्मोहन में जग को घेरे !!
भीड़ भरा मन, पड़े अकेला!

सपनों का साम्राज्य सजाकर
दिवा-स्वप्न मद-मग्न पड़ा है!!
नींदें मीठी, जाग बनी हैं
हर बन्धन अब रत्न-जड़ा है!!
अर्ध-मूर्छा उत्सव-खेला!

उपादान प्रतिदान कहाँ कुछ
जीवन को वरदान मानिये,
सब आदान प्रदान मात्र हैं
सांसों को अनुदान जानिए!
हर विश्राम गमन की बेला!

जीवन मिला हमें अलबेला!!
खट्टा, मीठा, तिक्त, कसेला!!

गाय का गीत

शक्ति, बुद्धि देकर करुणा का पाठ पढ़ाती है!
दृष्टि-सृष्टिदा कामधेनु माता कहलाती है!!

पंचतत्व को पंचामृत से करती है नित पुष्ट!
पंचकर्म को पँचज्ञान से रखती है परितुष्ट!
कपिला,नंदिनी,देवनी,भौमा,सुरभी, वेदमयी,
शिव के प्रिय नंदी की माता, कभी न होती रुष्ट!
कृष्णवल्ली ही राधा की श्यामा बन जाती है!

देश-देश में रूप बदलती, नाम बदलती हैं!
धारपारकर, कांकरेज,अंगोल विहरती हैं!
साहीवाल,भगनाड़ी,दज्जल, गावलाव, पंवार,
कंगायम,नीलोर, मालवी,गिर-'गिर' चरती हैं!
ऋषभदेव की सिद्ध शुभंकर, विष्णु कहाती है!

पंचकोश का पंचगव्य से परिशोधन करती!
कल्मष, कुत्सा कृत कषाय का संशोधन करती!
कोटि-कोटि देवत्व धारिणी, प्राणवायु दाता,
ऋग्वेद की' ऋचा अघन्या का संबोधन करती!
गुणातीत गो गोपित-गुण का ज्ञान कराती है!

अतः समग्र समर्पण से हम नित्य झुकाएं शीश!
सर्वदेव,विधि,विष्णु सहित होंगे प्रसन्न गौरीश!
रघुकुल ने जिसको पूजा, श्रीकृष्ण बने गोपाल,
वैतरणी तर जाएँ हम पाकर उसके आशीष!
गोसेवा गोदान से बढ़कर पुण्य कमाती है!

ग़ज़ल

कब मिले बिछुड़े हमें कुछ याद आता ही नहीं!!
एक *सकता* पसरकर बैठा है, जाता ही नहीं!!

हम कहाँ हैं,तुम कहाँ,यह कौन बतलाए हमें,
वो जिसे सब कुछ पताहै,कुछ बताता ही नहीं!!

मुल्क में खुद्दार लोगों को हवालातें मिलीं,
मुचलके में छूटकर आना उन्हें भाता नहीं!!

लो गुरिल्लों की लड़ाई तेज़ होती जा रही,
क्यों सियासत के नशे में प्यार भाता ही नहीं!!

शोर करती हैं लहर सागर की छाती पर बहुत,
लाल, मूंगा यूँ कभी तल पर तो'आता ही नहीं!!

कीजिये मत बात उनके सामने अब अम्न की,
खून के अतिरिक्'त उनको, कुछ सुहाता ही नहीं!!

देश नफ़रत खेज़ है, अलगाव है, उन्माद है,
आइये, उठिए यहां अब चैन आता ही नहीं!!

सकता= स्तब्धता, मूर्च्छा

लूटा है!

बड़ी मुश्किल है, दिल के साज़ का हर तार टूटा है!!
सुना है फिर अंधेरों ने, चाँद-बाजार लूटा है!!

भरोसे की दिवारों पर किये चालाकियां कब्ज़ा!
सियासत तोड़ देती है लड़ाई का हरे'क जज़्बा!
सुनहरे ख्वाब बुनकर मकड़ियां ज़ाले बिछाती है!
उम्मीदों के खिलाकर गुल तितलियों को फंसाती है!
निगहबां बन के किसने अपना ही घरबार लूटा है!

बिना तैयारियों के किसने जलसाघर सजाया है।
बिना हांका किये जंगल में आखिर क्या फंसाया है।
उड़ी है बेजुबानों के मुखों से चैन की लाली!
निजामत हंस रही है अपनी मुख्तारी पै दे ताली!
लुटेरों ने बहू बेटी का हर श्रृंगार लूटा है!

बिसातों को बिछाते ये कहाँ से लोग आये हैं!
बने हैं मोहरे इंसान, ये किसने बनाये हैं!
नशा उन्माद का पीते हैं, अपनों को पिलाते हैं!
अमन और चैन की बस्ती में नफरत क्यों उगाते है!
ये किसने प्रेम औ' **विश्वास का भंडार** लूटा है?

सृजन की समीक्षा

1.

आदरणीय रामरिया जी
की रचनाएँ पढने को मिली इसके पूर्व इनका आत्मकथ्य पढा जो अनावश्यक रूप से लंबी होती गई प्रारंभ में उसे कहानी समझने की भूल कर बैठी बाद में यह संस्मरणातम आतकथ्य लगी ।
इनकी सभी रचनाएँ हिन्दीनिष्ठ है ।

मन की निराशा जनक स्थिति से उबरती हूई सुख दुख आशा निराशा की अनुभूतियों को बदलते मौसम के संग किस तरह कवि मन अनूभुत करता है बहुत ही सुंदर उपमा और उपमानों संग प्रस्तुति करण ।

हृदय तारों को झंकृत करती
मन की सारी कलुषताओं को भूला कर सन्नाटे को तोड़ने का आहवाहन करती मनुहार
बहृत ही खुबसूरत रचना
प्रेम गीत गाने का सुमधुर संदेश देती है ।

प्रकृति का अनुदान मनुष्य अगर सीख ले तो
वर्तमान संकट खतम ही हो जाए त्याग समरसता और सुख शांति का
का संदेश देती है निश्चित ही प्रकृति का कर्म अनुकरणीय है ।जो सभी को जीवन देती है किसी का अहित नही करती ।
वही संदेश आदरणीय रामरिया जी की इस रचना में समाज हित समाहित है ।

जीवन दर्शन छीजती यह रचना क्षणभंगुरता की ओर इशारा करती सांसो की क्षीणता का एहसास बोध कराती हैं जिसे मानव भूलकर मायावी कृत्यों में बंध जाता है ।

गौ माता की महत्ता उसके अंग अंग में भगवान पंचगव्य की उपयोगिता अनेक क्षेत्रों में पाई जाने वाली विभिन्न नाम व रूपों से अवगत कराती ज्ञान वर्धन रचना है ।
आज गौ माताओं पर कितना अत्याचार हो रहा है काश कुछ लोग इस पीड़ा को समझ पाते ।
बहृत-बहृत ही सुंदर रचना
लेखक **बधाई** के पात्र हैं।

वर्तमान दृष्टिगोचर होती त्रासदी की पीड़ा गजल के माध्यम से कही गयी है ।

परिदृश्य में जो निशीदिवस लूटपात हत्या बलात्कार जैसी घटनाओं का विभत्स
रूप छाया है मनुष्य की मानसिकता किस गर्त में डूबी जा रही है इंसान
छल प्रपंच के सहारे अपनों का ही विश्वास खोता जा रहा है
सचमुच भयावह स्थिति है लेखक की संवेदना शब्दों में अलंकृत है।

इस तरह आदरणीय रामरिया जी की सभी रचनाएँ सुंदर शिल्पों और बिंबो से
सजी संदेशप्रधान और मनोरम
बन पड़ी है हृदय को छूती है जो किसी भी लेखनी की सफलता है
मेरी शुभकामनाएँ हैं कि इनकी लेखनी अबाध प्रवाह से बहती रहे ।

सुधा शर्मा राजिम

2.

अंतरा के पटल पर केंद्रीय रचनाकार के रूप में डा० रामकुमार रामरिया जी का हार्दिक **अभिनंदन।**

आत्मकथ्य के रूप में मेरी कहानी को पढ़ना आरंभ किया तो कहानी-उपन्यास पढ़ने के जैसे आनंद की अनुभूति हुई। वर्णित बातें सजीव चित्रों की भाँति सामने होती हुई लगीं। इतनी सधी और सशक्त लेखनी को नमन है। धन्य हैं वे सभी परिवार जन, मित्र और साहित्य के पुरोधा.... जिन्होंने आप से व्यक्तित्व को गढ़ते हुए आपकी लेखनी को इतना सशक्त बनाया। यदि डा० रामकुमार जी ने संस्मरण, कहानी और उपन्यास पर भी अपनी लेखनी चलाई होगी तो निश्चय ही पाठक उन्हें साँस रोके, पूरा पढ़ कर ही अन्य किसी काम के लिए उठे होंगे। कवि रिप में इनकी लेखनी का लोहा तो काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कर ही रहीं हैं और इसका रहस्य भी जो अंत में उजागर किया है.... अनवरत सीखते जाना। इसका महत्व जिसने समझ लिया तो फिर कुछ शेष नहीं रह जाता।

आपकी रचनाओं पर में अलपज्ञ... लिखने की हिमाकत या चेष्टा.... जो भी कहा-समझा जाये.... कर रही हूँ।

मौसम.... पढ़ कर मन प्रसन्न हो गया, बिलकुल वैसे ही.... जैसे पंक्ति में...मन को फिर गुनगुनाने का अवसर मिला। सच में इसे तो गुनगुनाते रहने का मन करता है।

सन्नाटा की..... सन्नाटा चारों ओर है, कुछ गुनगुनाइए,आधे खुले पटों को ज़रा खटखटाइये, उत्सव का समय हो गया है अब तो आइये.... पंक्तियाँ तो रचना की जान हैं।

प्रकृति के जो निकट गया है वह बिलकुल गीत में वर्णित भावों के आनंद को आपकी तरह अनुभव करेगा।
जीवन मिला हमें अलबेला!!, गाय के महत्व को बताता गाय का गीत और ग़ज़ल, लूटा है.... से लेकर सभी रचनाएँ भाव और कला पक्ष दोनों ही दृष्टियों से सशक्त, पाठकों को आनंदित कर झकझोर देने वाली हैं।
धन्यवाद है अंतरा के मंच का... जिसने हमें डा० रामकुमार जी की रचनाओं से परिचित करवाया।
भविष्य में भी इनकी रचनायें पढ़ने को मिलती रहेंगी।
शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

3.

आदरणीय रामरिया सर को नमन : अद्भुत अद्वितीय अविस्मरणीय परिचय दिया है आपने , लग रहा था कि कोई फिल्म चल रही है आँखों के सामने। बचपन से ही पढ़ाई के साथ साथ साहित्य में रुचि और कलाओं से भरपूर परिवार जनों का सानिध्य। लाजवाब जीवन यात्रा , बेमिसाल अनुभव और शानदार प्रस्तुतिकरण। लग रहा था कि अभी जाने कितने अनछुए पहलू जानने बाकी हैं।
मौसम, अति सुन्दर सृजन, गहराइयों से निकले हुए भाव, शब्द नहीं हैं और सही मायने में तो मुझे अधिकार भी नहीं है इतने उम्दा रचनाकार के लिए समीक्षा करूँ। सन्नाटा, अद्भुत सृजन, गीत, अति सुन्दर , जीवन, बिल्कुल सटीक और सार्थक सृजन, गाय का गीत, अविस्मरणीय सृजन, ग़ज़ल, बेहतरीन , लूटा है निशब्द करती हुई रचना।
आपकी लेखनी को बारम्बार नमन। स्वस्थ जीवन, सृजनशीलता, सतत निरंतरता के लिए अशेष शुभकामनाएँ। शब्द न्यून हैं , गौण हैं , मैं क्या कहूँ आपके सम्मान में , बस स्नेहाशीष बनाए रखें। -

पिंकी परुथी "अनामिका"

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com